सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का प्रथम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक मर्यादापुरूषोत्तम भगवान श्रीराम को समर्पित है। इस विशेषांक में भगवान श्रीराम के उदात्त चरित को दर्शाया गया है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'संस्कृत नाटकों में विलक्षण रामकथा'** नामक शोधलेख में भगवान श्रीराम के संस्कृत नाटकों के माध्यम से विभिन्न स्वरूपों का दर्शन कराया गया है। तत्पश्चात् पं. महेशदत्त शर्मा द्वारा संकलित **'मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम'** लेख में भगवान राम के पुरुषों में उत्तम स्वरूप का दर्शन मिलता है। इसी क्रम में महामण्डलेश्वर ज्ञानेश्वरपुरी जी द्वारा लिखित **'अवधपुरी अति रूचिर बनाई'** नामक शोधलेख में पुण्यनगरी अयोध्या पावन नदी सरयू के पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व का वर्णन किया गया है साथ ही भगवान श्री राम के वंशानुक्रम का भी उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा